अनुक्रमणिका

अनुक्रमणिका

❖ **प्रथम अध्याय : 'शिवप्रसाद सिंह व्यक्तित्व एवं कृतित्व का सामान्य परिचय .....1 - 16**

प्रस्तावना

1.1 जीवन परिचय

1.1.1 जन्म

1.1.2 शिक्षा

1.1.3 नौकरी

1.1.4 माता-पिता

1.1.5 बचपन

1.1.6 विवाह

1.1.7 देहान्त

1.2 व्यक्तित्व की विशेषताएँ

1.2.1 बहिरंग व्यक्तित्व

1.2.2 अंतरंग व्यक्तित्व

1.2.2.1 सीधे स्वभाव के आदमी

1.2.2.2 मेघावी छात्र

1.2.2.3 अच्छे मित्र

1.2.2.4 प्रतिभा संपन्न

1.3 कृतित्व

1.3.1 कहानी संग्रह

1.3.2 उपन्यास

1.3.3 नाटक

1.3.4 निबंध संग्रह

1.3.5 ललित निबंध

1.3.6 समीक्षा

1.3.7 रिपोर्ताज

1.3.8 जीवनी

1.3.9 संपादन कार्य

1.3.10 अनुवाद

1.4 पुरस्कार एवं सम्मान

निष्कर्ष

❖ द्वितीय अध्याय : "शिवप्रसाद सिंह की कहानियों में चित्रित वस्तु-पक्ष 'कर्मनाशा की हार' और 'इन्हें भी इंतजार है' के परिप्रेक्ष्य में".....17- 38

प्रस्तावना

2.1 ग्रामीण जीवन से संबंधित वस्तु-पक्ष

2.2 नारी जीवन से संबंधित वस्तु-पक्ष

2.3 महानगरीय जीवन से संबंधित वस्तु-पक्ष

2.4 शिक्षा से संबंधित वस्तु-पक्ष

निष्कर्ष

❖ तृतीय अध्याय : "शिवप्रसाद सिंह की कहानियों में चित्रित नारी के विविध रूप" ..... 39 - 82

प्रस्तावना

3.1 नारी - परिभाषा

3.2 नारी का स्वरूप

3.2.1 नारी संवेदना के विविध रूप : परिवार के आधार पर

3.2.1.1 माँ के रूप में

3.2.1.2 बहन के रूप में

3.2.1.3 पत्नी के रूप में

3.2.1.4 प्रेमिका के रूप में

3.2.1.5 सास के रूप में

3.2.1.6 भाभी के रूप में

3.2.1.7 बहु के रूप में

3.2.1.8 बेटी के रूप में

3.2.2 नारी संवेदना के विविध रूप : विशेषता के आधार पर

3.2.2.1 परित्यक्त्या नारी

3.2.2.2 शोषित नारी

3.2.2.3 उपेक्षित नारी

3.2.2.4 विद्रोही नारी

3.2.2.5 शिक्षित नारी

3.2.2.6 अनपढ़ नारी

3.2.2.7 स्वाभिमानी नारी

3.2.2.8 मजदूरी करनेवाली नारी

3.2.2.9 धोखे का शिकार नारी

3.2.2.10 संघर्षशील नारी

3.2.2.11 दूसरों पर हावीं होनेवाली नारी

निष्कर्ष

❖ **चतुर्थ अध्याय : "शिवप्रसाद सिंह की कहानियों में चित्रित नारी की समस्या"..... 83 - 122**

प्रस्तावना

4.1 समस्या शब्द का अर्थ

4.2 समस्या की परिभाषा

4.3 समस्या की उपयुक्तता

4.4 समस्या के प्रकार

4.4.1 व्यक्तिगत समस्याएँ तथा आंतरिक समस्याएँ

4.4.2 बाह्य समस्याएँ

4.5 सामाजिक समस्याएँ

4.6 नारी समस्या

4.6.1 शिवप्रसाद सिंह की कहानियों में चित्रित समस्याएँ

4.6.1.1 विवाह

4.6.1.2 विधवा की समस्याएँ

4.6.1.3 अवैध मातृत्व / कुँवारी माता / भ्रूण हत्या से संबधित समस्या

4.6.1.4 वेश्या से संबंधित समस्याएँ

4.6.1.5 निर्धनता से उत्पन्न समस्या / आर्थिक समस्या

4.6.1.6 कामकाजी नारी की समस्या

4.6.1.7 आत्महत्या की समस्या

4.6.1.8 कुंठाग्रस्त जीवन की समस्या

4.6.1.9 प्रेम विवाह की समस्या

4.6.1.10 बलात्कार की समस्या

4.6.1.11 परित्यक्त्या नारी की समस्या

4.6.1.12 गृहत्याग की समस्या

4.6.1.13 अनमेल विवाह की समस्या

4.6.1.14 अशिक्षा की समस्या

4.6.1.15 पति के अनैतिक संबंधों से त्रस्त नारी की समस्या

निष्कर्ष

❖ **पंचम अध्याय : "शिवप्रसाद सिंह की कहानियाँ शिल्प के परिप्रेक्ष्य में"**

.....123- 201

प्रस्तावना

5.1 शिल्प का स्वरूप

5.2 शिल्प का महत्व

5.2.1 कथावस्तु

5.2.1.1 कहानी की कथावस्तु का महत्व

5.2.1.2 कथावस्तु की प्रधानता तथा अनिवार्यता

5.2.2 चरित्र चित्रण

5.2.2.1 चरित्र चित्रण का स्वरूप

5.2.2.2 चरित्र चित्रण का महत्व

5.2.2.2.1 प्रमुख पुरूष पात्र

5.2.2.2.2 प्रमुख नारी पात्र

5.2.2.2.3 गौण स्त्री-पुरूष पात्र

5.2.3 कथोपकथन या संवाद

5.2.3.1 कथोपकथन का स्वरूप

5.2.3.2 कथोपकथन के भेद

5.2.3.3 कथोपकथन के गुण

5.2.3.4 कथोपकथन का महत्व

5.2.4 देशकाल और वातावरण

5.2.4.1 ग्रामांचल परिवेश

5.2.4.2 प्राकृतिक परिवेश

5.2.4.3 घुडदौड का वातावरण

5.2.4.4 उदासी का वातावरण

5.2.5 भाषा शैली

5.2.5.1 भाषा

5.2.5.1.1 भाषा के गुण

5.2.5.1.2 भाषा के विविध रूप

5.2.5.1.3 भाषा का महत्व

5.2.5.1.4 आलोच्य कहानियों में भाषा का मूल्यांकन

5.2.5.1.4.1 तत्सम शब्द

5.2.5.1.4.2 तद्भव शब्द

5.2.5.1.4.3 उर्दु शब्द

5.2.5.1.4.4 अरबी शब्द

5.2.5.1.4.5 दविरूक्त शब्द

5.2.5.1.4.6 अंग्रेजी शब्द

5.2.5.1.4.7 मुहावरें

5.2.5.2 शैली

5.2.5.2.1 शैली का स्वरूप

5.2.5.2.2 शैली के गुण

5.2.5.2.3 शैली के भेद

5.2.5.2.3.1 आत्मकथात्मक शैली

5.2.5.2.3.2 पत्रात्मक शैली

5.2.5.2.3.3 स्वप्न शैली

5.2.5.2.3.4 पूर्व दीप्ति शैली

5.2.5.2.3.5 कथात्मक शैली

5.2.6 उद्देश्य

5.2.6.1 उद्देश्य का महत्व

5.2.6.2. आलोच्य कहानी में उद्देश्य

5.2.7 शीर्षक

5.2.7.1 शीर्षक का महत्व

5.2.7.2 आलोच्य कहानी में शीर्षक का मूल्यांकन

निष्कर्ष

उपसंहार

संदर्भ ग्रंथ सूची